सांस्कृतिक आंदोलन के आग्रह के साथ इप्टा का दूसरा राज्य सम्मेलन संपन्न

भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा), झारखंड का तीनदिवसीय दूसरा राज्य सम्मेलन गत १४ अप्रैल को झारखंड के वरिष्ठतम लोक गायक भरत नायक और कई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संस्कृतिकर्मियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ. सम्मेलन का आयोजन चाईबासा स्थित बलराज सहानी नगर (पिल्लई हॉल) में किया गया था. इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक जुटान स्थानीय लोगों के लिए एक नये अनुभव के साथ नवीनतम रंगबोध के स्वाद को पहचानने का भी मौका था. यही कारण था कि लोगों ने पूरे उत्साह के साथ इस सांस्कृतिक हलचल का अभिनंदन किया. यह सम्मेलन और सांस्कृतिक जुटान महज औपचारिकता नहीं, बल्कि साम्राज्यवाद, सांप्रदायवाद और जीवन के दुसह्य परिस्थितियों के विरूद्ध आक्रोश के साथ-साथ भविष्य के प्रति गहरी आस्था और उम्मीद का एक समवेत स्वर था.

सम्मेलन की शुरूआत झारखंड के प्रतिष्ठित और वरिष्ठतम लोक गायक भरत नायक ने इप्टा का झंडा फहरा कर किया. इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य अतिथि सह इप्टा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और चर्चित चरित्र अभिनेता अंजन श्रीवास्तव, राष्ट्रीय सचिव तनवीर अख्तर व अमिताभ चक्रवर्ती, अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रंगकर्मी प्रवीर गुहा, प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह प्रसिद्ध आलोचक डॉ. खगेंद्र ठाकुर, एटक नेता पी.के. गांगुली सहित राज्य के विभिन्न क्षेत्र से आये संस्कृतिकर्मी और कलाकार उपस्थित थे. झंडोत्तोलन के बाद झारखंड इप्टा की अध्यक्ष सह चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता दयामणि बारला, कार्यकारी अध्यक्ष विनय भूषण और महासचिव उपेंद्र कुमार मिश्रा के नेतृत्व में एक रंगयात्रा निकाली गयी. इस रंगयात्रा की खासियत थी-झारखंडी लोकनृत्यों में समावेशित यहां की माटी की सोंधी-सोंधी खुशबू और रंगकर्मियों द्वारा साम्राज्यवाद और सांप्रदायवाद के खिलाफ गाये जाने प्रतिरोधी गीतों का एक साथ होना. इसके बाद खुले सत्र की शुरूआत हुई, जिसमें मुख्य अतिथि अंजन श्रीवास्तव ने सांप्रदायिकता, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खिलाफ प्रतिबद्ध सांस्कृतिक आंदोलन की जरूरत को रेखांकित की और इस कार्य में इप्टा के ऐतिहासिक दायित्व पर प्रकाश डाला.

हस्तक्षेपकारी भूमिका के साथ पहले दिन का अंतिम कार्यक्रम सांस्कृतिक संध्या का प्रारंभ लइयो इप्टा की गायन मंडली के जनवादी गीतों के साथ हुआ. गायन मंडली ने अपने गीतों के जरिये समाज, देश और दुनिया में, जो कुछ भी बदसूरत है, बुरा है उसके खिलाफ उठ खड़े होने का आह्वान किया. उसके बाद इप्टा चाईबासा की कलाकार उषा मिश्रा और साथियों के द्वारा सरायकेला शैली में छऊ नृत्य प्रस्तुत किया गया. इस नृत्य का कथानक पौराणिक होते हुए भी सृजनधर्मी था. तत्पश्चात प्रवीर गुहा की परिकल्पना और निर्देशन में अल्टरनेटिव लिविंग थियेटर के रंगकर्मियों ने 'तृतीय विश्वयुद्ध' का मंचन किया, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया. इस नाट्य प्रस्तुति में साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक अतिक्रमण को विषय वस्तु बनाया गया था. श्री गुहा के अद्भुत निर्देशकीय कौशल और कलाकारों के जीवंत अभिनय से दर्शकों के साथ एक गहरा संवाद स्थापित किया, जबकि इस प्रस्तुति में भाषा का कोई उपयोग नहीं किया गया था. इस नाटक ने कई बार दर्शकों को झकझोरा, संवेदित किया, स्तब्ध किया, सोचने पर विवश किया और अंततः एक गहरे यकीन के साथ अपने अंत पर पहुंचा. उसके बाद तनवीर अख्तर के निर्देशन में थर्ड फॉर्म का नाटक 'मुझे कहां ले आये कोलंबस' पटना इप्टा के कलाकारों द्वारा अभिनीत हुआ. यह नाटक पूंजीवाद के भोगवादी जीवनमूल्य से उपजी लिप्सा के कारण होने वाले प्रकृति के अविवेकपूर्ण दोहन और उसके संकट को गहरे रूप में रेखांकित किया. यह नाटक बार-बार विकास के वर्तमान मॉडल को खारिज करते हुए वैकल्पिक अवधारणा का आग्रह करता है. नाटक की परिकल्पना और संवाद संजीव और संगीत संयोजन आशुतोष मिश्रा का था.

सम्मेलन के दूसरे दिन के प्रारंभ में एक विचारगोष्ठी हुई, जिसका विषय 'संस्कृतिकर्म और सामाजिक सरोकार' था.विचारगोष्ठी में डॉ. खगेंद्र ठाकुर ने अपने आलेख में आज के ज्वलंत मुद्दे और उसके लिए प्रतिबद्ध संस्कृतिकर्म के प्रश्नों को केंद्रित किया. पूरी गोष्ठी में एक गंभीर और महत्वपूर्ण बहस हुई और कई वैचारिक और सांस्कृतिक बिंदु उभर कर सामने आये. खासकर सांप्रदायिकता और उसके भयानक मानवद्रोही चेहरे के खिलाफ एक सशक्त सांस्कृतिक प्रतिरोध की जरूरत को उजागर किया गया. वैश्वीकरण के नाम पर आक्रामक साम्राज्यवाद द्वारा दुनिया के संसाधनों पर कब्जे के लिए इराक और अफगानिस्तान के ऊपर जबरन लादे गये युद्ध की विभित्स त्रासदी और करोड़ों लोगों के दयनीय जीवन प्रस्थितियों के खिलाफ एक व्यापक सांस्कृतिक हस्तक्षेप की जरूरत को बखूबी रेखांकित की गयी. साथ ही परोक्ष रूप से भी जनता के खिलाफ छेड़े गये अघोषित युद्ध एवं अपनी ही जनता के विरूद्ध छल और दमन पिछलग्गू सरकारों की प्रवृत्ति के प्रश्न पर गंभीरता से चर्चा हुई. इनके खिलाफ अपने गीतों को जनसंघर्षों का हथियार बनाना ही वर्तमान का युगबोध और संस्कृतिकर्म बताया. इस गोष्ठी को तनवीर अख्तर, अमिताभ चक्रवर्ती, प्रवीर गुहा, विनय भूषण, डॉ. अनिल ठाकुर और शैलेंद्र कुमार सहित कई संस्कृतिकर्मियों ने बहस में हिस्सा लेकर समृद्ध किया. इस सत्र का संचालन चाईबासा इप्टा के संरक्षक और प्रसिद्ध रंगकर्मी तरूण मोहम्मद ने किया था.

इसी दिन के दूसरे सत्र में प्रतिनिधि सत्र प्रारंभ हुई, जो अंतिम दिन के प्रथम सत्र तक चली. इस सत्र में सांगठनिक क्रियाकलापों और भावी योजनाओं पर कई शाखाओं के प्रतिनिधियों ने गंभीर चर्चा की. निष्कर्ष के तौर पर पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपनी जनता के संघर्षों में सांस्कृतिक सक्रियता के साथ अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाते हुए मजबूती से खड़े होने का संकल्प लिया गया. इसके अलावा झारखंड और देश के कई ज्वलंत मुद्दे पर प्रस्ताव पारित किया, जो इस प्रकार थे- सिस्टर वालसा प्रकरण में विधान सभा की निरर्थक बहस, ५५ एमाओयू के नाम पर प. सिंहभूम सहित राज्य के विभिन्न हिस्सों में छुपे खनिज संपदाओं को देशी-विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनी को सौंपने की साजिश की झारखंड सरकार की प्रवृत्ति, ड्रामेटिक परफारमेंस एक्ट-१८५५, विश्वविद्यालयों में जनजातीय विभाग की उपेक्षा तथा सेज (सिंगूर और नंदीग्राम प्रकरण) के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित हुई. साथ ही राज्य के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों की हिफाजत, कला-साहित्य और खासकर आदिवासी लोक कला-साहित्य अकादमी के गठन के सवाल पर प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें सरकार का इन पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए आंदोलन करने की बात कही गयी है. इसी सत्र में अगले सम्मेलन तक के लिए ५१ सदस्यीय राज्य परिषद गठित की गयी. इसके अलावा १२ सदस्यीय सचिव मंडल और २५ सदस्यीय कार्यकारिणी गठित हुई है. सचिव मंडल में इबरार अहमद अध्यक्ष, श्यामल मल्लिक कार्यकारी अध्यक्ष, शशिभूषण सिंह, जगलाल सिंह व शशि कुमार उपाध्यक्ष, शैलेंद्र कुमार महासचिव, संजय कुमार चौधरी, सत्यनारायण, प्रेम प्रकाश व इसरार आलम सचिव और कोषाध्यक्ष आलोका कुजूर चुनी गयीं हैं. इनके अलावा झारखंड इप्टा ने १२ सदस्यीय संरक्षक मंडल का भी गठन किया है.

१३ और १४ अप्रैल को भी हस्तक्षेपकारी भूमिका के साथ सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें राज्य की विभिन्न सांस्कृतिक मंडलियों ने अपनी कला प्रस्तुत किया. इन प्रस्तुतियों का भरपूर रसास्वादन चाईबासा के दर्शकों ने किया. इस तरह इप्टा के दूसरे राज्य सम्मेलन के मौके पर आयोजित तीनदिवसीय सांस्कृतिक जुटान झारखंड और खासकर चाईबासा के सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण और हस्तक्षेपकारी भूमिका और राज्य में जबरन परोसे जा रही सांस्कृतिक प्रदूषण के खिलाफ कलाकारों, बुद्धिजीवियों और संस्कृतिकर्मियों की व्यापक एकजूटता के आह्वान के साथ संपन्न हुआ.